International Journal of Home Science 2022; 8(3): 269-271

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2028; 8(3): 269-271
© 2022 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 06-06-2022
Accepted: 11-07-2022

मयूरी वर्मा
षोधाथी, गृहविज्ञान, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. वर्षा चौधरी
प्राध्यापक, षासकीय, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
मयूरी वर्मा
षोधाथी, गृहविज्ञान, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश, भारत

मध्यमवर्गीय परिवार में आर्थिक स्थिति से परिवार पर पड़ने वाले प्रभावों का एक सामाजिक अध्ययन

मयूरी वर्मा, डॉ. वर्षा चौधरी

सारांश
'क्षेत्र विषेष की तुलना करने के लिये उस क्षेत्र के लोगों की आय सबसे महत्वपूर्ण विषिष्टता समझी जाती है। सामान्यतः क्षेत्र विषेष की आय सम्पूर्ण रूप में पारिवारिक आय पर निर्भर होती है। आम तौर पर अधिक आय वाले परिवारों को अधिक विकसित समझा जाता है जो इस समझ पर आधारित है कि अधिक आय का अर्थ है मानवीय आवष्यकताओं की सभी वस्तुओं का अधिक होना। जो भी उन्हें पसंद है उनका पास होना। इस दृष्टिकोण से अधिक आय अपने आप में महत्वपूर्ण लक्ष्य हो सकता है लेकिन भारत जैसे विकासषील देष में चित्र का दूसरा पहलू नजर आता है अन्य देषों की तरह यहां भी आय के आधार पर उच्च आय वर्ग, मध्यम आय वर्ग और निम्न आय वर्ग श्रेणियां स्पष्ट रूप से उल्लेखित है।

कूटशब्द: मध्यमवर्गीय परिवार, आर्थिक स्थिति, सामाजिक अध्ययन

प्रस्तावना
विकास अथवा प्रगति की धारणा हमेषा से हमारे साथ है। हमारी आकांक्षायें और इच्छायें है कि हम क्या करना चाहते और अपना जीवन कैसे जीना चाहते है? इसी तरह हम विचार रखते है कि कोई देष कैसा होना चाहिये? हमें किन अनिवार्य वस्तुओं की आवष्यकता है? क्या सभी का जीवन बेहतर हो सकता है? लोग मिल–जुलकर कैसे रह सकते है? क्या और अधिक समानता हो सकती है? विकास इन सभी प्रष्नों पर विचार करने और इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के उपयों से जुड़ा है। हम आज जो जीवन जी रहे है, वह अतीत से प्रभावित है। इम इसे जाने बिना बदलाव की इच्छा नहीं रख सकते। इसी तरह हम केवल एक लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रक्रिया के द्वारा ही इन आषाओं और संभावनाओं को वास्तविक जीवन में प्राप्त कर सकते है। आज लोग चाहते है कि उन्हें नियमित काम, बेहतर मजदूरी और अपनी उपज अथवा अन्य उत्पादों के लिये अच्छी कीमतें मिले। दूसरे षब्दों में कहा जाय तो वे ज्यादा आय चाहते है। किसी भी तरह से ज्यादा आय चाहते के साथ ही लोग बराबरी का व्यवहार, स्वतंत्रता, सुरक्षा और दूसरों से आदर मिलने की इच्छा भी रहते है। वे भेदभाव से अप्रसन्न होते है। ये सभी महत्वपूर्ण लक्ष्य है, बल्कि कुछ मामलों में अधिक आय और अधिक उपभोग से अधिक महत्वपूर्ण हो सकते है।
वर्ष 1913, की यूके रजिस्ट्रार–जनरल की रिपोर्ट में सांख्यिकीविद टी.एच.सी. स्टीवेन्सन ने मध्यम आय वर्ग की पहचान उच्च आय वर्ग और श्रमिक वर्ग के बीच आने वाले लोगों के रूप में की थी। इस वर्ग की मुख्य परिभाषित विषेषता महत्वपूर्ण मानव पूंजी का नियंत्रण है, जो अभी भी अभिजात वर्ग के उच्च वर्ग के प्रभुत्व में है जो दुनिया में अधिकांष वित्तीय और कानूनी पूजी को नियंत्रित करते है। 20वीं सदी के पायनियर अमेरिकी मार्क्सवादी फ्रैना लुईस कोरी ने मध्यम वर्ग को स्वतंत्र छोटे उद्यमियों का वर्ग, संपत्तिहीन किसान, वेतन भोगी प्रबंधकीय और पर्यवेक्षी कर्मचारियों को माना।
भारत में मध्यम आय वर्ग के लोगों की संख्या पर अनुमान व्यापक रूप से भिन्न है। 'द इकोनॉमिस्ट', के अनुसार यदि 800 रूपये प्रतिदिन सक अधिक बनाने वालों के कटऑफ का उपयोग करके परिभाषा रची जाये तो भारत की 78 मिलियन आबादी को वर्ष 2017 तक मध्यम आय वर्ग माना जा सकता है। इसी प्रकार यदि रूपये 160 से 800 प्रतिदिन की आय वालों को षामिल किया तो संख्या भिन्न होगी। इसे नवीन मध्यम आय वर्ग की श्रेणी में रखा जा सकता है। मुख्य रूप से यह राज्यों और षहरों के भूगोल, उनकी जीवन षैली, आय और षिक्षा के आधार पर है। वर्ष 2018, की विष्व असमानता रिपोर्ट के अनुसार अभिजात वर्ग अर्थात 10 प्रतिषत मध्यम आय वर्ग की तुलना में अधिक दर से धन जमा कर रहे है, इससे भारत का मध्यम आय वर्ग राज्य के अनुसार आकार में सिकुड़ सकता है।

अध्ययन की आवष्यकता

विष्व में एक तरफ जहां गरीबी कम होती जा रही है और मध्यम वर्ग एवं निम्न मध्यम वर्ग की संख्या में इजाफा हो रहा है। वही भारत में यह वर्ग सिकुड़ता जा रहा है। 'प्यू' की नई षोध रिपोर्ट में दावा किया गया है कि दुनिया के कई देषों में गरीबी के स्तर में गिरावट देखी गयी है और जीगों की जीवनयापन के साधनों में सुधार आया है। मध्य प्रदेष राज्य में भी वर्ष 2001 से 2011 तक करोड़ों लोग गरीबी के दायरे से बाहर निकले है।

इस दषक में जहां वैष्विक गरीबी में भरी कमी दर्ज की गयी, वहीं मध्यम वर्ग के लोगों की आय में भी दोगुगी बढ़ोतरी आंकी गयी है। हालांकि वित्तीय वर्ष 2021 में बेहतर तैयार की गयी राजकोषीय और मौद्रिक नीति के समर्थन के बावजूद कोविड–19 महामारी के कारण प्रदेष की अर्थव्यवस्था में 7.3 प्रतिषत की कमी आयी जो दूसरी घातक लहर के बाद 12.5 हो गयी। पाया गया है कि महामारी से प्रेरित आर्थिक सुस्ती और प्राकृतिक आपदाओं के चलते प्रदेष के ग्रामीण और तहसील क्षेत्रों में आर्थिक सुस्ती का विषेष रूप से उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा है।

इस स्थिति को फिर से बेहतर बनाने के लिये आवष्यक होगा कि क्षेत्र विषेष की वर्तमान आय वर्गो के परिवारों का निर्धारण किया जाये और परिणाम आधार पर उन्मुख योजनाओं का संचालन किया जाये।

षोध समस्या षीर्षक

मध्यमवर्गीय परिवार में आर्थिक स्थिति से परिवार पर पड़ने वाले प्रभावों का एक सामाजिक अध्ययन।

षोध के उद्देष्य

1. इटारसी षहर के मध्यम आय वर्ग के परिवारों की मासिक आय का अध्ययन करना।
2. इटारसी षहर के मध्यम आय वर्ग परिवारों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
3. इटारसी षहर के मध्यम आय वर्ग के परिवारों की मासिक से परिवार पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

षोध परिकल्पना

1. इटारसी षहर के मध्यम आय वर्ग के परिवारों की मासिक आय से परिवार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

षोध परिसीमा

प्रस्तुत अध्ययन हेतु मध्य प्रदेष राज्य के नर्मदापुरम जिले की इटारसी ष्षहर को चयनित किया गया है।

षोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्रदत्तों के विष्लेषण के लिये षोध की सर्वे विधि का प्रयोग किया गया जिसके अन्तर्गत उपकरण के रूप में न्यादर्षो हेतु प्रष्नावनी प्रयुक्त की गयी। प्रदत्तों के संग्रहण के पष्चात सांख्यिकीय विष्लेषण के लिये माध्य, माध्य मानक विचलन, एफ–अनुपात मूल्य एवं पी–मूल्य की सहायता से परिकल्पना का परीक्षण किया गया।

सारणी संख्या 1: इटारसी षहर के मध्यम आय वर्ग के परिवारों की मासिक आय एवं उनकी आर्थिक स्थिति का सांख्यिकीय विष्लेषण

क्र	विवरण	छ	डमंद	ैक	डै	कि	ितिंजपव अंसनम	च.अंसनम
1	इटारसी षहर के मध्यम आय वर्ग के परिवारों की मासिक आय	50	11.9	3.1639	228.01	99	22.43968	ढ .00001
2	इटारसी षहर के मध्यम आय वर्ग परिवारों की आर्थिक स्थिति	50	8.88	3.2112				

चढ .05 पर सार्थक

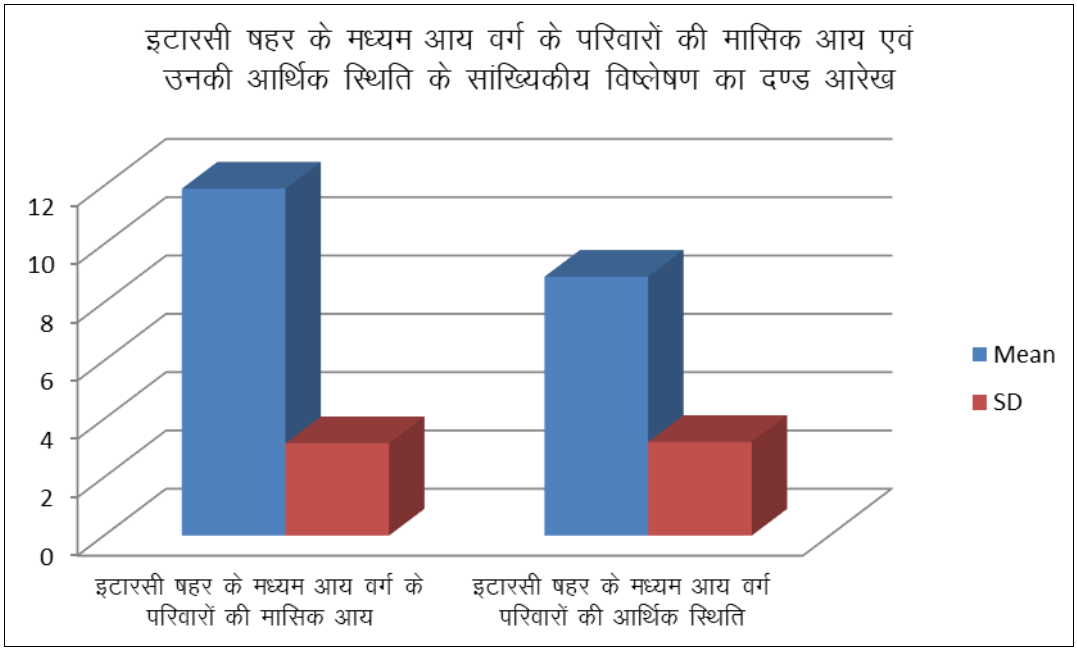

दण्ड आरेख 1: इटारसी षहर के मध्यम आय वर्ग के परिवारों की मासिक आय एवं उनकी आर्थिक स्थिति के सांख्यिकीय विष्लेषण का दण्ड आरेख

प्रदत्तों का विष्लेषण

उपरोक्त सारणी में इटारसी षहर के मध्यम आय वर्ग के परिवारों की मासिक आय एवं उनकी आर्थिक स्थिति के सांख्यिकीय विष्लेषण से ज्ञात होता है कि इटारसी षहर के मध्यम आय वर्ग के परिवारों की मासिक आय से सम्बन्धित प्राप्तांकों का माध्य 11.9 तथा माध्य विचलन 3.1639 पाया गया है, जबकि इटारसी षहर के मध्यम आय वर्ग के परिवारों की आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित प्राप्तांकों का माध्य 8.88 तथा माध्य विचलन 3.2112 पाया गया है। इसी तरह इटारसी षहर के मध्यम आय वर्ग के परिवारों की मासिक आय एवं उनकी आर्थिक स्थिति के सांख्यिकीय विष्लेषण में स्वतंत्रयांष 99 पर f –अनुपात मूल्य 22.43968 तथा p –मूल्य < .00001 है, जो P <.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया है।

परिकल्पना का परीक्षण

इस तरह सारणी के विष्लेषण में इटारसी षहर के मध्यम आय वर्ग के परिवारों की मासिक आय एवं उनकी आर्थिक स्थिति के सांख्यिकीय विष्लेषण के अन्तर्गत इटारसी षहर के मध्यम आय वर्ग के परिवारों की मासिक आय एवं उनकी आर्थिक स्थिति में अन्तर पाया जाता है, अतएव परिकल्पना –इटारसी षहर के मध्यम आय वर्ग के परिवारों की मासिक आय से परिवार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, को अस्वीकृत किया जाता है।

सन्दर्भ

1. ए. बी. स्टीवर्ट एवं क्लेग, 1986, ''राजनीति और अर्थव्यवस्था'', पी–158, आईएसबीएन : 987–07102–04523, 4 अक्टूबर 2009 प्रकाषित.
2. बैजेदी, रहीम, 2019, ''विरोधाभासी वर्ग : मध्य वर्ग में रूचि और राजनीतिक रूढ़िवाद का विरोधाभास'', एषियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइन्स, 17 जुलाई 2019, 0–3, 272–285
3. ब्रांडी, क्लारा एवं बुगे, 2014, ''विकासषील और उभरते देषों में नये मध्य वर्गों की एक कार्टोग्राफी'', चर्चा पत्र, 27 जून 2014, प्रेस.
4. कृष्णन, संध्या, हाटेकर एवं नीरज, 2017, ''भारत में नये मध्यम वर्ग का उदय और इसकी बदलती संरचना'', आर्थिक एवं राजनीतिक साप्ताहिक, प्रकाषित 3 जून 2017.
5. मैथ्यू, सॉलोमन, 2018, ''भारत का लापता मध्यम वर्ग'', अर्थषास्त्र, प्रकाषित 12 सितम्बर 2018